

आज़ादी का अमृत महोत्सव
आज़ादी के 75 वर्ष

ISSN: 0971-4391



डीआरडीओ समाचार

डीआरडीओ की मासिक गृह पत्रिका

www.drdo.gov.in

“बलस्य मूलं विज्ञानम्”

श्रावण - भाद्रपद 1940, अगस्त 2021 खण्ड 33 अंक 08

डी आर डी ओ ने जमीन से हवा में मार करने वाली नई पीढ़ी की आकाश-एनजी मिसाइल का सफल परीक्षण किया



इस अंक में

अगस्त, 2021

खंड-33, अंक 08

आई एस एस एन : 0971-4391

मुख्य लेख

04

डी आर डी ओ ने जमीन से हवा में मार करने वाली नई पीढ़ी की आकाश मिसाइल (आकाश-एन जी) का सफल परीक्षण किया



नवोन्मेष

05

डी आर डी ओ द्वारा स्वदेशी तकनीकों का प्रयोग करके औद्योगिक पैमाने पर उच्च सामर्थ्य की बीटा टिटैनियम मिश्र धातु विकसित की गई

डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई कम लंबाई के अस्थाई पुल (10 मीटर स्पैन) की प्रणाली (शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम-एस एस बी एस 10 मी) भारतीय सेना में शामिल की गई

डी आर डी ओ द्वारा नई पीढ़ी की अग्नि-पी बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया

डी आर डी ओ द्वारा अधिक दूरी तक मार करने में सक्षम 122 मिमी कैलिबर के रॉकेट का सफल परीक्षण किया गया

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) द्वारा रक्षा अनुप्रयोगों हेतु उच्च शक्ति के सूक्ष्म तरंग उपकरणों में प्रयोग में लाए जाने के लिए उन्नत सामग्रियां विकसित की गईं

घटनाक्रम

मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप

कार्मिक समाचार

निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम

10

12

15

20



प्रकाशन का 33वां वर्ष

मुख्य संपादक : डॉ. अलका सूरी

प्रबंध संपादक : सुमति शर्मा

संपादक : अजय कुमार

संपादकीय सहायक : राकेश कुमार

संपादकीय सहायता : शालिनी छाबड़ा, राम कुमार ठाकुर

वेबसाइट :

<https://www.drdo.gov.in/drdo/pub/newsletter/>
अपने सुझावों से हमें अवगत कराने के लिए कृपया संपर्क करें :

director@desidoc.drdo.in

दूरभाष : 011-23902403, 23902482

फैक्स : 011-23819151

हमारे संवाददाता

अहमदनगर : कर्नल अतुल आप्ते, श्री आर ए शेख, वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वीआरडीई); **अंबरनाथ** : डॉ. सुसन टाइटस, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल); **चांदीपुर** : श्री पी एन पांडा, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर); **बेंगलूरु** : श्री सुब्बुकुट्टी एस, वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई); श्रीमती एम. आर. भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स); श्रीमती फहीमा एजीजे, कृत्रिम आसूचना एवं रोबोटिकी केंद्र (केयर); सुश्री तृप्ति रानी बोस, सैन्य उडनयोग्यता एवं प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक); श्रीमती जोसेफिन निर्मला एम, रक्षा उडडयानिकी अनुसंधान प्रतिष्ठान (डेयर); श्रीमती अनुया वेंकटेश, रक्षा जैव-अभियांत्रिकी एवं विद्युत चिकित्सा प्रयोगशाला (डेबेल); श्री वेंकटेश प्रभु, इलेक्ट्रॉनिक एवं रडार विकास प्रतिष्ठान (एलआरडीई); डॉ. विशाल केसरी, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी); **चंडीगढ़** : श्री एच एस गोसाईं, हिम तथा अवधाव अध्ययन प्रतिष्ठान (सासे); डॉ. प्रिंस शर्मा, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल), **चेन्नई**: श्रीमती एस जयसुधा, संग्राम वाहन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (सीवीआरडीई); **देहरादून**: श्री अभय मिश्रा, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील); श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (आईआरडीई); **दिल्ली**: श्री आशुतोष भटनागर, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेप्टेम); डॉ. दीप्ति प्रसाद, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास); डॉ. निधि महेश्वरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर); श्री नवीन सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास); श्री अनुराग पाठक, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा); डॉ. इंदु गुप्ता, लेजर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक); सुश्री नूपूर श्रोत्रिय, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी); डॉ. रूपेश कुमार चौबे, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल); **ग्वालियर** : श्री आर के श्रीवास्तव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (डीआरडीई); **हल्द्वानी**: डॉ. अतुल ग्रावर, रक्षा जैव-ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर); **हैदराबाद**: श्री हेमंत कुमार, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एसएसएल); श्री प्रमोद के झा, उन्नत प्रणाली केंद्र (सीएसएस); डॉ. जे के राय, उन्नत अंकीय अनुसंधान एवं विश्लेषण समूह (अनुराग); सुश्री विदिशा लहिरी, उच्च ऊर्जा प्रणाली एवं विज्ञान केंद्र (सीएचईएसएस); श्री ए आर सी मूर्ति, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल); डॉ. मनोज कुमार जैन, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल); डॉ. के नागेश्वर राव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल); श्री ललित शंकर, अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई); **जगदलपुर**: डॉ. गौशोर अग्निहोत्री, एस एफ परिसर (एसएसएसी); **जोधपुर**: श्री शोरींद्र कुमार, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल); **कानपुर**: श्री ए के सिंह, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (डीएमएसआरडीई); **कोच्चि** : श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिकी एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल); **लेह**: डॉ. डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार); **मसूरी** : डॉ. गोपा बी चौधरी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम); **मैसूर**: डॉ. एम पाल्मुरगन, रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएफआरएल); **पुणे**: डॉ. (श्रीमती) जे ए कानितकर, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई); डॉ. विजय पट्टर, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईए टी); श्री ए एम देवाले, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल); श्री एस एस अरोल, अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (इंजीनियर्स) (आरएंडडीई) (इंजी.); **तेजपुर**: डॉ. जयश्री दास, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)।

मुख्य लेख

डी आर डी ओ ने जमीन से हवा में मार करने वाली नई पीढ़ी की आकाश-एनजी मिसाइल का सफल परीक्षण किया

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) ने ओडिशा समुद्र तट से सटे चांदीपुर स्थित परीक्षण केंद्र एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर) से 21 जुलाई 2021 को जमीन-से-हवा में मार करने वाली नई पीढ़ी की आकाश-एनजी मिसाइल का सफल परीक्षण किया। मिसाइल को परीक्षण के लिए भूमि पर संस्थापित किए गए विभिन्न आयुध प्रणाली संघटकों अर्थात् मल्टीफंक्शन रडार, कमान, नियंत्रण एवं संचार प्रणालियों तथा लांचर, आदि से लैस एक प्लेटफॉर्म से दागा गया।

इस मिसाइल प्रणाली को रक्षा

अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद द्वारा डी आर डी ओ की अन्य प्रयोगशालाओं के सहयोग से विकसित किया गया है। मिसाइल का प्रक्षेपण भारतीय वायु सेना के अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया तथा वे डी आर डी ओ द्वारा प्राप्त की गई इस विशिष्ट उपलब्धि के साक्षी बने।

मिसाइल के प्रक्षेपण से संबंधित विभिन्न आंकड़ों को जुटाने के लिए एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर) ने वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग सिस्टम, रडार और टेलीमेट्री जैसे कई रेंज स्टेशनों को

तैनात किया था। इन प्रणालियों द्वारा मिसाइल के प्रक्षेपण के संबंध में जुटाए गए समस्त आंकड़ों से संपूर्ण आयुध प्रणाली के त्रुटि मुक्त कार्य निष्पादन की पुष्टि हुई है। परीक्षण के दौरान, मिसाइल ने अत्यधिक तीव्र गति से प्रस्तुत हो रहे हवाई खतरों को निष्प्रभावित करने के लिए आवश्यक उच्चस्तरीय गतिशीलता का प्रदर्शन किया।

देश की सुरक्षा हेतु आकाश-एनजी आयुध प्रणाली को तैनात किए जाने पर भारतीय वायु सेना की हवाई सुरक्षा सक्षमता में व्यापक वृद्धि होगी। उत्पादन एजेंसियों भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड



- ☑ नई पीढ़ी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल
- ☑ हवाई खतरों को निष्प्रभावित करने के लिए उच्च स्तरीय गतिशीलता
- ☑ भारतीय वायु सेना की हवाई सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ावा
- ☑ रक्षा मंत्री ने डी आर डी ओ को बधाई दी

(बी ई एल) और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बी डी एल) ने भी इस आयुध प्रणाली के परीक्षण में भाग लिया।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने इस आयुध प्रणाली के सफल परीक्षण पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन डी आर

डी ओ, भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बी डी एल), भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बी ई एल), भारतीय वायु सेना और उद्योग जगत को बधाई दी है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के अध्यक्ष ने इस

आयुध प्रणाली के अभिकल्प विकास एवं सफल परीक्षण से जुड़ी टीम के सदस्यों द्वारा किए गए सतत प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह मिसाइल भारतीय वायु सेना को और अधिक समर्थ एवं सक्षम बनाएगी।

नवोन्मेष

डी आर डी ओ द्वारा स्वदेशी तकनीकों का प्रयोग करके औद्योगिक पैमाने पर उच्च सामर्थ्य की बीटा टिटैनियम मिश्र धातु विकसित की गई

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) ने विमानन क्षेत्र में प्रयोग में लाए जाने के लिए संरचनात्मक फोर्जिंग (एयरोस्पेस स्ट्रक्चरल फोर्जिंग) के लिए स्वदेशी तकनीकों का प्रयोग करके औद्योगिक पैमाने पर वैनेडियम, आयरन और ऐलुमिनियम युक्त उच्च सामर्थ्य की मेटास्टेबल बीटा टिटैनियम मिश्र धातु Ti-10V-2Fe-3Al विकसित की है। इसे रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) द्वारा विकसित किया गया है, जो डी आर डी ओ की हैदराबाद स्थित एक प्रमुख प्रयोगशाला है। वर्तमान में इन मिश्र धातुओं को कई विकसित देशों द्वारा तुलनात्मक रूप से अधिक भार के पारंपरिक नाइक्रोम क्रोमियम मॉलिब्डेनम Ni-Cr-Mo संरचनात्मक इस्पात के स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी और कम भार वाले विकल्प के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। सामर्थ्य एवं भार अनुपात के अपेक्षाकृत उच्च मान से युक्त Ti&10V&2Fe&3Al मिश्र धातु में उत्कृष्ट फोर्जिंग सक्षमता है और इसका प्रयोग वैमानिकी अनुप्रयोगों के लिए भार में उपयोगी कमी लाते हुए जटिल संरचना वाले कलपुर्जों के निर्माण के लिए किया जा सकता है। इस मिश्र धातु से निर्मित किए जाने वाले कुछ कलपुर्जों

में स्लैट/पलैप ट्रैक, लैंडिंग गियर और लैंडिंग गियर में प्रयुक्त ड्रॉप लिंक के नाम शामिल हैं। उच्च शक्ति बीटा टिटैनियम मिश्र धातु अपनी उच्च सामर्थ्य, तन्यता, श्रान्ति और कठिनाई से विभंग उत्पन्न होने (फ्रैक्चर टफनेस) के अभिलक्षणों के कारण अद्वितीय हैं और इन अभिलक्षणों के

कारण वैमानिकी उद्योग द्वारा वायुयान में प्रयुक्त विभिन्न कलपुर्जों को निर्मित किए जाने के लिए इस मिश्र धातु का प्रयोग अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त, इस्पात की तुलना में बेहतर संक्षारण प्रतिरोध के कारण इस मिश्र धातु की संपूर्ण उपयोगिता अवधि के दौरान



अनुरक्षण लागत कम होने को ध्यान में रखते हुए, भारत में भी इस महंगी सामग्री के उपयोग को सही ठहराया जा सकता है। रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) ने विभिन्न अभिकरणों के साथ अत्यधिक सुदृढ़ सहयोगात्मक संबंध स्थापित करके कच्चे माल के चयन, मिश्र धातु पिघलाने, ताप यांत्रिक प्रक्रमण, पराध्वानिक तरंगों पर आधारित नॉन डिस्ट्रक्टिव इवैल्यूएशन (एन डी ई), ऊष्मा उपचार, यांत्रिक अभिलक्षण निर्धारण और श्रेणी प्रमाणन से संबंधित कार्यों को पूरा किया है। वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए) ने वायुयान में प्रयोग में लाए जा

रहे इस्पात से विनिर्मित 15 से भी अधिक ऐसे कलपुर्जों की पहचान की है जिन्हें निकट भविष्य में Ti-10V-2Fe-3Al मिश्र धातु फोर्जिंग द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है और ऐसा करके भार में 40% तक की कमी लाई जा सकती है। लैंडिंग गियर ड्रॉप लिंक वायुयान में प्रयोग में लाए जाने वाला ऐसा पहला उपकरण है जिसे रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) की भागीदारी से हिंदुस्तान वैमानिकी लिमिटेड (एच ए एल), बंगलुरु में वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए) द्वारा सफलतापूर्वक तैयार किया गया है और उड़ान योग्यता के लिए विधिवत प्रमाणित

किया गया है। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने वायुयानों में प्रयुक्त कलपुर्जों के संरचनात्मक फोर्जिंग हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली उच्च सामर्थ्य की मेटास्टेबल बीटा टिटैनियम मिश्र धातु Ti-10V-2Fe-3Al को स्वदेश में विकसित करने के लिए डी आर डी ओ और उद्योग जगत को बधाई दी है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी ने इस तकनीक को स्वदेश में विकसित करने में शामिल टीमों द्वारा किए गए समर्पित प्रयासों की सराहना की।

डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई कम लंबाई के अस्थाई पुल (10 मीटर स्पैन) की प्रणाली (शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम-एस एस बी एस 10 मी) भारतीय सेना में शामिल की गई

डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई कम लंबाई के अस्थाई पुल (10 मीटर स्पैन) की प्रणाली (शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम-एस एस बी एस 10 मी) की पहली उत्पादन खेप की 12 प्रणालियां (एस एस बी एस 10 मी) 2 जुलाई 2021 को करिअप्पा परेड ग्राउंड, दिल्ली कैंट में आयोजित किए गए

एक समारोह में थलसेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे द्वारा भारतीय सेना में शामिल की गई। इस अवसर पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी उपस्थित थे। शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम (एस एस बी एस 10 मी) 9.5 मीटर तक

की खाई को एक सिंगल स्पैन द्वारा कवर करने के लिए अत्यधिक उपयोगी है और यह सैन्य टुकड़ियों की तेजी से आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए 4 मीटर चौड़ा पूरी तरह से ढका हुआ मार्ग उपलब्ध कराता है। पुणे स्थित डी आर डी ओ की प्रमुख अभियांत्रिकी प्रयोगशाला अनुसंधान तथा



विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)) ने इन शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम-एस एस बी एस 10 मी पुलों को मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो (एल एंड टी) के साथ मिलकर अभिकल्पित एवं विकसित किया है। पहली उत्पादन खेप में निर्मित की गई ये सभी 12 शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम (एस एस बी एस 10 मी) मैसर्स लार्सन एंड टूब्रो (एल एंड टी) द्वारा ही विनिर्मित की गई हैं जिसका इनके विनिर्माण के लिए उत्पादन एजेंसी के रूप में चयन किया गया है। प्रोजेक्ट शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम में टाट्रा 6×6 चेसिस पर 5 मीटर एस एस बी एस के दो प्रोटोटाइप और टाट्रा 8×8 री-इंजीनियर्ड चेसिस पर 10 मीटर एस एस बी एस के अन्य दो प्रोटोटाइप तैयार किए गए थे। इन दोनों प्रणालियों का गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजी क्यूए), एम ई टी और प्रयोक्ताओं द्वारा कठोर परीक्षण किया गया। इन परीक्षणों के सफलतापूर्वक पूरा हो जाने के पश्चात प्रणालियों को सशस्त्र सेनाओं में शामिल किए जाने की सिफारिश की गई। एस

एस बी एस 10 मी ब्रिजिंग सिस्टम सेना के पास पहले से उपलब्ध सर्वत्र ब्रिजिंग सिस्टम (75 मी) की गुणवत्ता के समनरूप है जिसमें अंतिम स्पैन द्वारा 9.5 मीटर से कम के गैप को कवर करने की आवश्यकता होती है। भारतीय सेना को सौंपे गए शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम (एस एस बी एस 10 मी) के पुल को भार वर्गीकरण के आधार पर एम एल सी 70 के वर्ग में रखा गया है अर्थात ये पुल 70 किलो तक का भार उठा सकते हैं। शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम (एस एस बी एस 10 मी) के पुल सैन्य टुकड़ियों की तेजी से आवाजाही में सहायक सिद्ध होंगे तथा संसाधनों को तेजी से अपेक्षित स्थान पर पहुंचाने में मदद मिलेगी। डी आर डी ओ को सैन्य ब्रिजिंग सिस्टम जैसी महत्वपूर्ण संग्राम अभियांत्रिकी प्रणालियों को विकसित करने का व्यापक अनुभव है। भारतीय सेना की गतिशीलता में वृद्धि करने के लिए सिंगल स्पैन 5 मीटर और 10 मीटर, शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम, 46 मीटर मॉड्यूलर ब्रिज, 20 मीटर बीएलटी-टी 72 और मल्टी स्पैन 75 मीटर सर्वत्र ब्रिजिंग

सिस्टम आदि जैसे अनेक यंत्रीकृत समाधान (मैकेनिकल मोबिलिटी सॉल्यूशंस) विकसित किए गए हैं। सैन्य कार्मिकों द्वारा बिछाए जाने वाले मैन्युअली लॉन्च 34.5 मीटर माउंटेन फुट ब्रिज भी डी आर डी ओ द्वारा पहले विकसित किया गया था। इन पुलों को भारतीय सेना ने व्यापक रूप से स्वीकार किया है। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम (एस एस बी एस 10 मी) को सफलतापूर्वक विकसित करने और उसे सशस्त्र सेना में शामिल किए जाने के लिए डी आर डी ओ, सेना और उद्योग जगत को बधाई दी है।

उन्होंने कहा है कि भारतीय सशस्त्र सेनाओं में इस ब्रिजिंग सिस्टम को शामिल किए जाने से तेजी से बढ़ रहे भारतीय रक्षा उद्योग को और बढ़ावा मिलेगा तथा उद्योगों को आत्मनिर्भर भारत अभियान में अपना योगदान करने में मदद मिलेगी। डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ. सतीश रेड्डी ने भी इस ब्रिजिंग सिस्टम को सफलतापूर्वक विकसित किए जाने तथा भारतीय सेना में शामिल किए जाने पर टीम को बधाई दी।

डी आर डी ओ द्वारा नई पीढ़ी की अग्नि-पी बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) ने 28 जून, 2021 को ओडिशा के बालासोर तट पर डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम द्वीप से नई पीढ़ी की परमाणु क्षमता से युक्त बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-पी का सफल परीक्षण किया। पूर्वी तट के किनारे तैनात विभिन्न टेलीमेट्री और रडार स्टेशनों ने मिसाइल को ट्रैक किया और उसकी निगरानी की। मिसाइल ने उच्च स्तरीय सटीकता के साथ मिशन संबंधी सभी उद्देश्यों को पूरा करते हुए अपने लिए निर्धारित लक्ष्य को भेदने में सक्षम रही। अग्नि-पी, अग्नि श्रेणी की मिसाइलों का एक नई पीढ़ी का उन्नत संस्करण है। यह एक कनस्तर से प्रक्षेपित की जाने वाली मिसाइल है जिसकी मारक क्षमता 1000 से 2000 किमी है।





डी आर डी ओ द्वारा अधिक दूरी तक मार करने में सक्षम 122 मिमी कैलिबर के रॉकेट का सफल परीक्षण किया गया

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी आर डी ओ) ने 25 जून 2021 को ओडिशा के चांदीपुर तट पर एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर) से एक मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर (एम बी आर एल) से स्वदेशी तकनीकों द्वारा विकसित किए गए अधिक दूरी तक मार करने में सक्षम 122 मिमी कैलिबर रॉकेट के उन्नत संस्करण का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। अधिक दूरी तक मार करने में सक्षम 122 मिमी कैलिबर रॉकेट के चार उन्नत संस्करणों को लॉन्चर से सभी उपकरणों के साथ दागा गया। इस परीक्षण के दौरान मिशन से संबंधित सभी उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया गया। इस प्रकार के रॉकेट

भारतीय सेना द्वारा प्रयोग में लाए जाने के लिए विकसित किए गए हैं और ये 40 किलोमीटर की दूरी तक के लक्ष्य को ध्वस्त कर सकते हैं। परीक्षण के दौरान एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर) एवं प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई) द्वारा स्थापित किए गए टेलीमेट्री, रडार तथा वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणालियों सहित अन्य रेंज उपकरणों द्वारा रॉकेट के कार्य निष्पादन पर निरंतर निगरानी रखी गई। इस रॉकेट प्रणाली को डी आर डी ओ की पुणे स्थित आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई) और उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित

किया गया है तथा इसके विनिर्माण में मैसर्स इकोनॉमिक एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड, नागपुर की सेवाएं भी ली गई हैं। यह उन्नत संस्करण की रॉकेट प्रणाली मौजूदा 122 मिमी ग्रेड रॉकेटों का स्थान लेगी।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 122 मिमी कैलिबर रॉकेट के सफल परीक्षण पर डी आर डी ओ एवं उद्योग जगत को बधाई दी है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ जी सतीश रेड्डी ने इन सफल परीक्षणों में शामिल टीमों के प्रयासों की सराहना की है।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) द्वारा रक्षा अनुप्रयोगों हेतु उच्च शक्ति के सूक्ष्म तरंग उपकरणों में प्रयोग में लाए जाने के लिए उन्नत सामग्रियां विकसित की गईं

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) द्वारा रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग डी आर डी ओ में अनुप्रयोग हेतु महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक संघटकों के लिए प्रयोग में लाए जाने तथा संबंधित श्रेणी की प्रौद्योगिकी के अन्य क्षेत्रों में प्रयोग की उच्च संभावना से युक्त उन्नत सेरामिक पदार्थ विकसित किया गया है। देश में रक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग के लिए विभिन्न वायु एवं स्थलीय क्षेत्रों की निगरानी करने वाले रडारों, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों (ई डब्ल्यू एस), मिसाइल टोही और ऊर्जा आयुध प्रणालियों (एनर्जी वेपन सिस्टम) में प्रयोग में लाए जाने के लिए कपल्ड कैविटी ट्रैवलिंग वेव ट्यूब (सी सी टी डब्ल्यू टी) को विकसित करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली इन सामग्रियों के विश्व भर में

काफी सीमित स्रोत उपलब्ध हैं। सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सामग्री की उपलब्धता की अनिश्चितता में हाल के वर्षों में और अधिक वृद्धि हुई है तथा विदेशी आपूर्तिकर्ता कंपनियां प्रायः इन सामग्रियों की आपूर्ति में विलंब कर देती हैं या आपूर्ति से इंकार कर देती हैं। रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) ने सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बी ई एल) एवं रक्षा क्षेत्र की अन्य कंपनियों द्वारा सूक्ष्म तरंग को अवशोषित करने वाले उपकरणों के उत्पादन के लिए सूक्ष्म तरंग ऊर्जा को अवशोषित करने वाले आवश्यक लोसी सेरेमिक्स, हाई कंडक्टिव सबस्ट्रेटों तथा फेरोइलेक्ट्रिक कैथोडों को स्वदेश में विकसित करने के

लिए महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्यों को किया है। रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) ने सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी) के साथ सक्रिय सहयोगात्मक संबंध स्थापित करके इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में प्रयोग में लाए जाने के लिए अनेक संघटक पदार्थों जैसे कि जी-बैंड कपल्ड कैविटी ट्रैवलिंग वेव ट्यूब (सी सी टी डब्ल्यू टी) को विकसित करने के लिए आवश्यक परावैद्युतांक से युक्त ऐलुमिनियम नाइट्राइड सिलिकॉन कार्बाइड (AIN&SiC) सेवर बटन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए ऐलुमिनियम नाइट्राइड (AIN) युक्त उच्च चालकता गुणों वाले सबस्ट्रेट, जी-बैंड सूक्ष्म तरंग नलिकाओं के लिए मैग्नीशियम ऑक्साइड-सिलिकॉन कार्बाइड

(MgO&SiC) से निर्मित सूक्ष्म तरंग ऊर्जा को अवशोषित करने वाले लोसी स्टिक, उच्च शक्ति के निर्दिष्ट ऊर्जा आयुधों (डी ई डब्ल्यू) के लिए उच्च परावैद्युत चालकता (डाई इलेक्ट्रिक परमिटिविटी) और शून्य आवेश गुणांक से युक्त फेरोइलेक्ट्रिक पी एल जेड टी कैथोडों और अन्य इसी प्रकार के अनेक संघटकों को सफलतापूर्वक विकसित किया है। सभी संघटकों को रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल) द्वारा आवश्यकता के अनुसार तप्त दाब प्रक्रम और तत्पश्चात आवश्यकता

के अनुसार मशीनन प्रक्रम को अपनाकर प्रक्रम पैरामीटरों का इष्टतमीकरण अर्थात् उन्हें उपयुक्त रूप में आवश्यकता के अनुरूप बनाते हुए विनिर्मित किया गया और उनकी आपूर्ति की गई। सामग्रियों में अति उच्च निर्वात दशाओं का सहन करने के लिए अपेक्षित परावैद्युतांक समाहित किए गए। उच्च चालकता अभिलक्षणों से युक्त ऐलुमिनियम नाइट्राइड (AIN) सबस्ट्रेट में उच्च वैद्युत रोधी गुण, परावैद्युत सामर्थ्य एवं उच्च तापीय चालकता से संबंधित अभिलक्षण उपलब्ध कराए गए। इस प्रक्रम से अन्य

अनुप्रयोगों के लिए पूर्णतः सघन एवं संपृक्त संरचना (>2.5 मिमी) के सबस्ट्रेट को भी निर्मित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। कॉपर पर्वाइल को सबस्ट्रेट के साथ आबंधित करने का कार्य प्रत्यक्ष आबंधन (डायरेक्ट बॉन्डिंग) और साथ ही सक्रिय धातु ब्रेजिंग तकनीक (एकल पक्ष या डबल साइड) को प्रयोग में लाकर किया गया। पी एल जेड टी फेरोइलेक्ट्रिक कैथोडों को ठोस अवस्था संश्लेषण तथा एक उच्च परावैद्युत नियतांक पर सिंटरन प्रक्रम द्वारा निर्मित किया गया।

रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) द्वारा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए

रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) के बीच शिक्षा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन पर रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) के निदेशक डॉ राजीव वाष्ण्य तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) के उप कुलपति प्रोफेसर एम जगदीश कुमार द्वारा इन दोनों संस्थानों के वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में किए गए। इस अवसर पर डॉ वाष्ण्य ने रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) में चरम पर्यावरण दशाओं में शरीर कार्यिकी, सैनिकों के स्वास्थ्य और कार्य निष्पादन, पोषण अनुवाशिकी (न्यूट्रिजेनोमिक्स), चिकित्सा सूचना विज्ञान औषधि विकास, जैव चिकित्सीय यंत्रिकरण तथा कार्मिकों की श्रम दक्षता के अनुरूप कार्य करने (एर्गोनॉमिक्स), मानव मशीन इंटरफेस आदि के क्षेत्रों में रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) में उपलब्ध अद्वितीय महत्वपूर्ण सक्षमता तथा इस

प्रयोगशाला द्वारा किए जा रहे अनुसंधान क्रियाकलापों पर प्रकाश डाला। इसका प्रयोग करके डिपास द्वारा सैन्य अभियानों के लिए चरम पर्यावरण दशाओं में तैनात की गई सैन्य टुकड़ियों की संग्राम दक्षता के संवर्धन के लिए आवश्यक अनुरूपी प्रक्रियाएं विकसित की गई हैं। प्रोफेसर कुमार ने कहा कि इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर इन दोनों संगठनों के बीच

द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध होगा तथा इस बात पर बल दिया कि इन दोनों संस्थानों के बीच सहयोगात्मक संबंध स्थापित किए जाने से दोनों संस्थानों द्वारा संयुक्त रूप से अनुसंधान क्रियाकलापों को करने, संकाय सदस्यों तथा छात्रों के इन दोनों संस्थानों के बीच पारस्परिक विनिमय कार्यक्रमों तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन



यू) में संस्थापित किए गए इनक्यूबेशन सेंटर में इनक्यूबेटिंग प्रौद्योगिकियों को संवर्धन प्रदान करने की दिशा में कार्य किए जा सकेंगे। इन दोनों ही संस्थानों अर्थात् जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) और रक्षा शरीर क्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) द्वारा अपने स्कूलों/केंद्रों के संकाय सदस्यों तथा छात्रों के बीच परस्पर सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने के अवसरों की तलाश की जाएगी।

जबकि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू) के पास जैव विज्ञान एवं जैव चिकित्सा क्षेत्रों में मौलिक अनुसंधान कार्य को करने का सामर्थ्य है वहीं रक्षा शरीर क्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) द्वारा देश में शरीर क्रिया विज्ञान और एर्गोनॉमिक्स तथा सैनिकों के स्वास्थ्य एवं सहायक प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में अनुप्रयुक्त अनुसंधान कार्यों को करने के संबंध में अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया जा रहा

है। इस समझौता ज्ञापन से न केवल अनुसंधान के क्षेत्र में नई संभावनाएं सृजित होंगी बल्कि नई वैज्ञानिक प्रतिभाओं को पी एच डी कार्यक्रमों में नामांकन तथा उन्हें सैन्य अभियानों से संबंधित चरम पर्यावरण दशाओं में संपोषणीय समाधान उपलब्ध कराने वाले बुनियादी एवं अनुप्रयुक्त दोनों पहलुओं से साक्षात्कार करने का अवसर उपलब्ध होगा।

घटनाक्रम

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोहों का आयोजन

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद में 21 जून 2021 को वर्चुअल मोड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसका केंद्रीय थीम 'योग के साथ रहें, घर पर रहें' था। इस अवसर पर आर्ट ऑफ लिविंग के सीनियर योगा कारपोरेट संकाय सदस्य, मेडिटेशन टीचर, योग फिटनेस एंड वेलबिइंग ट्रेनर श्री हसन तपती मुख्य अतिथि थे। श्री आर वी हराप्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक, डी एल आर एल ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं उन्हें दैनिक जीवन में योग के महत्व तथा मौजूदा वैश्विक महामारी के दौर में इसकी प्रासंगिकता के बारे में संक्षेप में बताया। श्री एस आर पंकज कुमार, वैज्ञानिक 'जी' एवं डी एल आर एल वर्क्स कमेटी के अध्यक्ष ने रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल) को सौंपे गए कर्तव्यों (चार्टर आफ ड्यूटीज) तथा इसके विजन एवं मिशन के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। श्रीमती लक्ष्मी,



वैज्ञानिक 'एफ' एवं अध्यक्ष एस एंड टी (विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी) ने मुख्य वक्ता से सभी प्रतिभागियों का परिचय कराया। योग गुरु हसन तपती द्वारा इस अवसर पर 'योग एवं चिंतन' विषय पर दिया गया व्याख्यान अत्यधिक प्रेरणाप्रद था। इस अवसर पर आपने एक योग सत्र का भी आयोजन किया जो प्रतिभागियों के लिए काफी सुखद एवं लाभकारी था। प्रतिभागियों द्वारा इस कार्यक्रम का संपूर्ण लाभ उठाया गया है। कार्यक्रम के अंत में निर्माण समिति के अध्यक्ष द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

नौसेना श्रौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'योगा फॉर वेलबिइंग' अर्थात् 'स्वास्थ्य के लिए योग' निर्धारित की गई है। वर्तमान समय में जबकि वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन और उसकी आजीविका पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए निर्धारित की गई थीम 'स्वास्थ्य के लिए योग' पूर्ण रूप

से प्रासंगिक है। नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल) ने इस योग दिवस का आयोजन संपूर्ण मानव समुदाय के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में योग के महत्व से संबंधित संदेश का प्रचार-प्रसार करके किया। इस अवसर पर प्रयोगशाला के परिसर में प्रमुख स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के संदेश को दर्शाते हुए पोस्टर लगाए गए तथा कर्मचारियों को घर पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ योग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस अवसर पर कर्मचारियों को डिजिटल, वर्चुअल और इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021 समारोह में प्रतिभागी बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कर्मचारियों ने 21 जून 2021 को अपने परिवार के सदस्यों के साथ घर पर सामान्य योगासनों को करके इस समारोह में अत्यधिक उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया। प्रयोगशाला के सभी कर्मचारियों ने आयुष मंत्रालय



द्वारा MyGov प्लेटफार्म (<http://rvwww.mygov.in>) पर आयोजित किए गए योग कार्यक्रमों में भी प्रतिभागिता की। कर्मचारियों को आयुष मंत्रालय के अधीनवर्ती मोरारजी

देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान द्वारा चलाए जा रहे दैनिक वर्चुअल योग प्रशिक्षण सत्रों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

वन महोत्सव का आयोजन

डी आर डी ओ मुख्यालय, दिल्ली

पर्यावरण से संबंधित मामलों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने और साथ ही पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की दृष्टि से डी आर डी ओ मुख्यालय द्वारा 7 जुलाई 2021 को वन महोत्सव मनाया गया। रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डी आर डी ओ के परिसर में एक पौधा लगाया। इस कार्यक्रम में महानिदेशक (एच आर), महानिदेशक (पी एम), महानिदेशक (आर एंड एम) तथा डी सी डब्ल्यू ई ने भी भाग लिया तथा पौध रोपण किया।



मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली

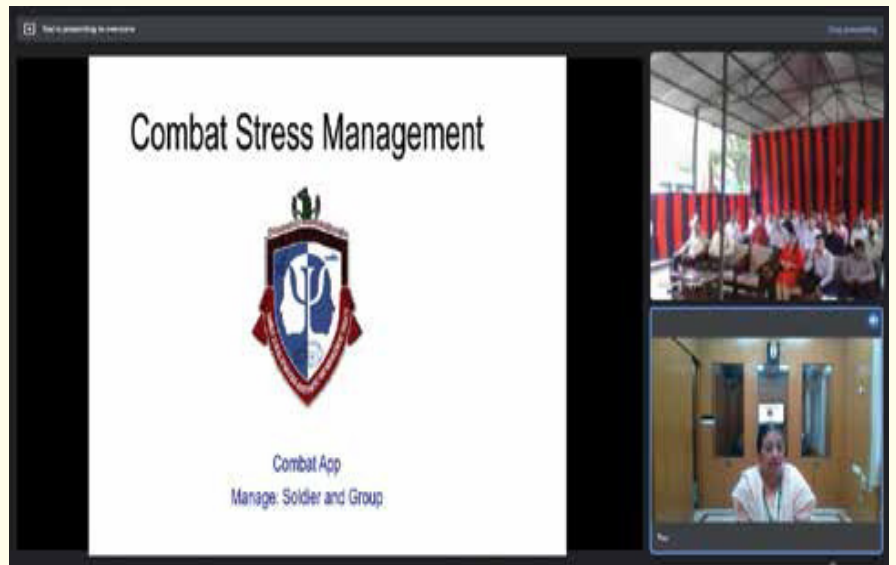
रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक) द्वारा 17 जुलाई 2021 को मेटकाफ हाउस परिसर में वन महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ अलका सूरी, निदेशक, डेसीडॉक ने वन महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए वृक्षारोपण के महत्व के बारे में बातचीत की। इस कार्यक्रम में काफी अधिक संख्या में कर्मचारियों ने भारी उत्साह के साथ भाग लिया और डेसीडॉक के परिसर में 95 से भी अधिक पौधे लगाए गए। इस समारोह को आयोजित किए जाने से कर्मचारियों को प्रकृति माता



से जुड़ने तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रति अपनी वचनबद्धता को प्रदर्शित करने का एक स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। डॉ राजीव विज, सह निदेशक इस समारोह के समन्वयक थे।

भारतीय थल सेना के लिए कॉम्बैट ऐप विषय पर वेबिनार का आयोजन

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली में भारतीय थल सेना के एस ए टी ए रेजिमेंट के लिए 'संग्राम तनाव प्रबंधन' विषय पर 7 से 8 जुलाई 2021 के दौरान दोदिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान रेजिमेंट स्तर पर सैन्य अधिकारियों, जूनियर कमीशन अधिकारियों (जे सी ओ) और जवानों सहित सशस्त्र सेना के 150 कर्मिकों को कॉम्बैट (ComBAT) और कॉम्बैट एक्टिव (ComBAT Active) नाम से तैयार किए गए दोनों ऐप्लिकेशनों के संबंध में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किए गए।



राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एन एस जी) के कार्मिकों हेतु 'बंधकों को छुड़ाने के लिए बातचीत' विषय पर वेबिनार का आयोजन



रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ने देश के प्रतिष्ठित सुरक्षा बल राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एन एस जी) के कार्मिकों हेतु 'बंधकों को छुड़ाने के लिए बातचीत तथा तनाव प्रबंधन' विषय-बंधक वार्ता पाठ्यक्रम संख्या 09 पर 5 जुलाई 2021

को एकदिवसीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार में सशस्त्र सीमा बल (एस एस बी), सीमा सुरक्षा बल (बी एस एफ) और भारतीय सेना सहित विभिन्न सुरक्षा बलों के अधिकारियों एवं जवानों ने भाग लिया। इस दौरान उन्हें 'बंधकों को छुड़ाने के लिए बातचीत'

की विभिन्न तकनीकों और साथ ही रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) द्वारा विकसित किए गए कॉम्बैट (ComBAT) ऐप के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इंस्टीट्यूट ऑफ नेशनल इंटीग्रेशन के लिए कॉम्बैट ऐप के संबंध में ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

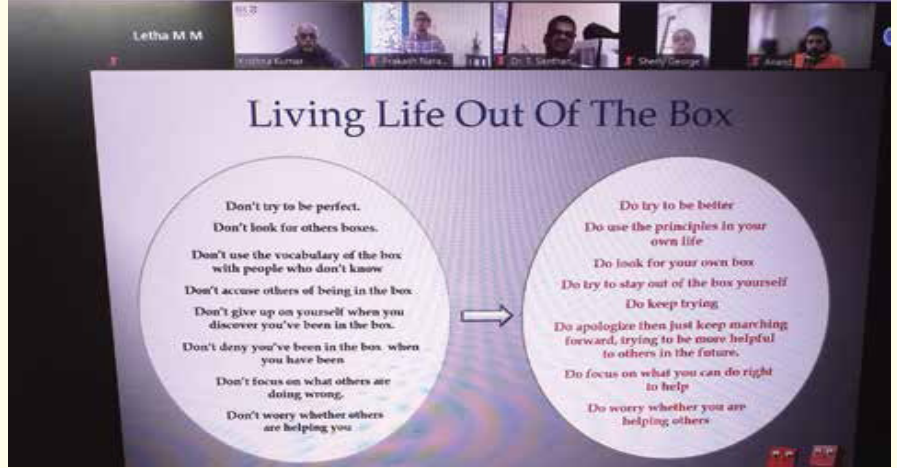
रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली द्वारा 15 और 16 जून 2021 को इंस्टीट्यूट ऑफ नेशनल इंटीग्रेशन (आई एन आई), पुणे से प्रशिक्षण प्राप्त भारतीय सेना में नए भर्ती किए गए धर्म शिक्षकों आर आर टी-89 बैच के लिए कॉम्बैट (ComBAT) ऐप के संबंध में एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस ऑनलाइन पाठ्यक्रम से भारतीय सेना

में भर्ती किए गए धर्म शिक्षकों (आर आर टी) को उनके यूनिटों में सैनिकों के यथासंभव उपयुक्त रूप में तनाव प्रबंधन के लिए कॉम्बैट (ComBAT) ऐप से जुड़ी विभिन्न तकनीकों, मूल्यांकन एवं क्रियाकलापों के संबंध में रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।



आत्म उत्कृष्टता हेतु स्वयं को तैयार करना विषय पर ऑनलाइन लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि द्वारा एन पी ओ एल के सभी प्रभागीय प्रमुखों के लाभार्थ 'आत्म उत्कृष्टता हेतु स्वयं को तैयार करना' विषय पर एक ऑनलाइन लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य प्रतिभागियों की सोच में एक ऐसा आमूल बदलाव लाना था अर्थात् उनका वैचारिक स्तर पर इस प्रकार का कौशल विकास करना था ताकि वे अपने प्रभागों का संगठनात्मक लक्ष्यों के अनुरूप अधिक प्रभावी रूप में मार्गदर्शन कर सकें। इस कार्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया था कि प्रतिभागियों में उच्च कार्य निष्पादन प्रस्तुत करने को ध्यान में रखते हुए 21वीं शताब्दी की



आवश्यकता के अनुरूप अपने प्रभागों का मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक सक्षमता लाई जा सके। इस पाठ्यक्रम में भावनात्मक बुद्धिमता, महत्वपूर्ण सोच और सहयोग से संबंधित व्यापक क्षेत्रों को भी शामिल किया गया था। प्रोफेसर

कृष्ण कुमार, मास्टर कोच, इंद्राड स्कूल ऑफ एग्जीक्यूटिव कोचिंग (आई एस ई सी) तथा भारतीय प्रबंध संस्थान (आई आई एम), बेंगलुरु के अतिथि संकाय सदस्य इस लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए ज्ञान साधन व्यक्ति थे।

भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी आई एस) प्रौद्योगिकी विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) तथा वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स) के वैज्ञानिकों को 5 से 7 अप्रैल 2021 के दौरान कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा स्वदेश में विकसित की गई भौगोलिक सूचना प्रणाली (केयर-जी आई एस) के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा स्वदेश में विकसित की गई भौगोलिक सूचना प्रणाली (केयर-

जी आई एस) से संबंधित प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके इसके उपयोग, वास्तविक समझ, विश्लेषण तथा मापन के संबंध में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान प्रतिभागियों को कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा स्वदेश में विकसित की गई भौगोलिक सूचना प्रणाली (केयर-जी आई एस) से संबंधित प्रौद्योगिकी के द्विविमीय एवं त्रिविमीय दृश्य प्रकार्यों एवं विशेषताओं को प्रयोग में लाने के संबंध में उदाहरण के साथ बताया गया।

इसके अतिरिक्त, प्रतिभागियों को कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा स्वदेश में विकसित की गई भौगोलिक सूचना प्रणाली (केयर-जी आई एस) की विभिन्न विशेषताओं एवं इसकी कार्य प्रणालियों को अपनी आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग में लाने तथा उन्हें अपने कामकाज में शामिल करने के संबंध में भी व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किए गए।

प्रशिक्षण के दौरान निदेशक, केयर ने प्रतिभागियों को कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा स्वदेश में



विकसित की गई भौगोलिक सूचना प्रणाली (केयर-जी आई एस) से संबंधित सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट किट (एस डी के) सौंपे गए और साथ ही संबंधित

प्रयोक्ता मैनुअल, प्रोग्रामर मैनुअल और उदाहरण कार्यक्रमों (एगजांपल प्रोग्राम) की पुस्तिका भी प्रतिभागियों को उपलब्ध कराई गई ताकि वे वायुवाहित प्रणाली

केंद्र (कैब्स) तथा पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) द्वारा चलाई जा रही विभिन्न परियोजनाओं में इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर सकें।

कार्मिक समाचार

नियुक्ति

महानिदेशक, एम एस एस

डॉ. बी एच वी एस नारायणमूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई को महानिदेशक, एम एस एस, डी आर डी ओ, हैदराबाद के रूप में नियुक्त किया गया है।

डॉ. मूर्ति एक विशिष्ट वैज्ञानिक हैं तथा भारत में रक्षा एवं अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए उन्नत उड्डयानिकी प्रौद्योगिकियों को स्वदेश में अभिकल्पित एवं विकसित करने के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान तथा विकास क्रियाकलापों के लिए जाने जाते हैं। निदेशक तथा कार्यक्रम निदेशक के रूप

में आपने अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई) में उड्डयानिकी एवं व्यापक श्रेणी की मिसाइलों एवं गाइडेड आयुध प्रणालियों को अभिकल्पित, विकसित एवं प्रयोक्ताओं को उनकी आपूर्ति करने के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करने वाले डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम मिसाइल परिसर में स्थापित की गई उड्डयानिकी से जुड़ी प्रयोगशाला अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई) को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। आपने क्षेत्रीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय (आर ई सी), वारंगल से इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अभियांत्रिकी में स्नातक की उपाधि तथा जवाहरलाल नेहरू तकनीकी विश्वविद्यालय (जी एन टी यू), हैदराबाद से प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर (एम टेक) की उपाधि और आई आई आई टी, हैदराबाद से कंप्यूटर विज्ञान में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है। आप डी आर

डी ओ से वर्ष 1986 में जुड़े।

डॉ. मूर्ति ने मिसाइल प्रणालियों तथा अन्य रक्षा अनुप्रयोगों हेतु प्रयोग में लाए जाने के लिए उन्नत ऑन बोर्ड कंप्यूटर (ओ बी सी) प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में मुख्य भूमिका का निर्वहन किया है। आपके द्वारा विगत तीन दशकों के दौरान निरंतर किए गए योगदान एवं प्रौद्योगिकी विकास को नेतृत्व प्रदान किए जाने के फलस्वरूप भारत को उन्नत श्रेणी के रियल टाइम एंबेडेड कंप्यूटरों, मिशन कंप्यूटिंग प्रणालियों तथा उड्डयानिकी से संबंधित अन्य विभिन्न प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ है। आपने भारत को विश्व के चुनिंदा देशों की विशिष्ट श्रेणी में शामिल करने वाले देश के पहले उपग्रह रोधी (ए सैट) मिसाइल परीक्षण से संबंधित

'मिशन शक्ति' के लिए उन्नत उड्डयानिकी उपकरणों की रचना एवं विकसित करने से संबंधित परियोजना एवं लंबी दूरी तक मार करने वाली अग्नि 5 मिसाइल कार्यक्रम को अपना नेतृत्व प्रदान किया है जिससे भारत रक्षा उपकरणों एवं आयुधों के स्वदेशी विकास के क्षेत्र में और अधिक सक्षम हुआ है। आपने दृश्य सीमा से परे हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल (बी वी आर ए ए एम)-अस्त्र, जमीन-से-हवा में तेजी से मार करने वाली क्यू आर एस ए एम मिसाइल, आकाश-1 एस, आकाश-एनजी, हाइपरसोनिक प्रौद्योगिकी प्रदर्शक यान (एच एस टी डी वी), अगली पीढ़ी की उन्नत विकिरण रोधी मिसाइल (एन जी ए आर एम), लंबी दूरी तक मार करने में सक्षम गाइडेड बम, ब्रह्मोस, टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (ए टी जी एम) नाग, हेलिना, एम पी ए टी जी एम, एस ए एन टी, बी एम डी, ए एन एस पी, अग्नि श्रेणी की मिसाइलों तथा अन्य गाइडेड आयुध प्रणालियों के लिए उड्डयानिकी प्रणालियों को सफलतापूर्वक विकसित करने तथा उन्हें प्रदर्शित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। परियोजना निदेशक के रूप में आपने स्मार्ट एंटी एयरफील्ड वेपन (एस ए ए डब्ल्यू) के अवधारणा सृजन, अभिकल्प एवं विकास से संबंधित क्रियाकलापों को अपना नेतृत्व प्रदान किया है तथा सटीक प्रहार करने की क्षमताओं से युक्त लंबी दूरी तक मार करने वाली स्मार्ट गाइडेड प्रणालियों को विकसित करने के लिए आधारशिला रखी है। एक ऑन बोर्ड कंप्यूटर विशेषज्ञ तथा प्रौद्योगिकी निदेशक के रूप में डॉ. मूर्ति ने विभिन्न मिसाइलों, युद्धक वायुयानों तथा सामरिक महत्व के अन्य अनुप्रयोगों के लिए उन्नत रियल टाइम कंप्यूटर प्रौद्योगिकियों के अवधारणा सृजन, आयोजना, अभिकल्प एवं विकास के क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान किया है। आपने सिंगल चिप

मिशन कंप्यूटर, सिस्टम-ऑन-चिप तथा इंटीग्रेटेड एवियोनिक्स मॉड्यूल (आई ए एम) के विकास एवं उत्पादन से संबंधित कार्यों को आरंभ किया जिसके परिणामस्वरूप अधुनातन छोटे आकार की स्मार्ट वेपन प्रणालियों के लिए ऑन बोर्ड उड्डयानिकी के लघु रूप (मिनिएचराइजेशन) के क्षेत्र में देश को व्यापक प्रगति हासिल हुई है। अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए योगदान से वैमानिकी एवं मिसाइल प्रौद्योगिकियों को स्वदेश में विकसित करने के कार्यक्रम पर अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। आपके द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए आपको कंप्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया के मानद अध्यक्षता का सम्मान प्रदान किया गया है तथा आपका इंडियन नेशनल अकादमी ऑफ इंजीनियरिंग (आई एन ए ई) एवं इंडियन सोसायटी ऑफ सिस्टम फॉर साइंस एंड इंजीनियरिंग के अध्यक्षता के रूप में चयन किया गया है। इनके अतिरिक्त डॉ. मूर्ति को अन्य विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है जिनमें एयरोनॉटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा दिया गया रॉकेट एंड संबंधित प्रौद्योगिकी पुरस्कार, आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए अग्नि पुरस्कार, डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार, अभिनव अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास पुरस्कार तथा डी आर डी ओ कार्य निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार उल्लेखनीय हैं।

निदेशक, अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियरिंग) (आर एंड डी ई (इंजी))

श्री पी एम कुरुलकर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने 01 जून 2021 को अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियरिंग) (आर एंड डी ई (इंजी)) के निदेशक का पदभार

ग्रहण किया है।

श्री कुरुलकर वर्ष 1985 में सी ओ ई पी, पुणे से प्रथम श्रेणी में विशेष



प्रतिष्ठा के साथ विद्युत अभियांत्रिकी में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात वर्ष 1988 में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ)

की अधीनवर्ती प्रयोगशाला संग्राम वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), अवदी से जुड़े। बाद में आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), कानपुर से ड्राइव्स एंड एप्लीकेशन के क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ पावर इलेक्ट्रॉनिक्स विषय में उन्नत पाठ्यक्रम को पूरा किया। आपको सैन्य अनुप्रयोगों के लिए मिसाइल लॉन्चरों, सैन्य अभियांत्रिकी उपकरणों, उन्नत रोबोटिकी एवं संचल मानवरहित प्रणालियों को अभिकल्पित एवं विकसित करने से संबंधित क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त है।

आकाश ग्राउंड सिस्टम के लिए प्रोजेक्ट लीडर और सिस्टम मैनेजर के रूप में आप आकाश टीम के एक प्रमुख सदस्य रहे हैं और आपने आकाश लांचरों तथा मिशन हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण जमीनी प्रणालियों (ग्राउंड सिस्टम्स) को अभिकल्पित एवं विकसित करने तथा उनका उत्पादन करने के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। अग्नि परियोजना के परियोजना निदेशक एस एफ के रूप में आपने लांचरों तथा भूमि संस्थित प्रणालियों (ग्राउंड सिस्टम्स) के सड़क एवं रेल संस्करणों को अभिकल्पित एवं विकसित करने से संबंधित कार्यों को दिशा प्रदान की। श्री कुरुलकर ने टीम लीडर तथा प्रमुख अभिकल्प निर्माता के रूप में अनेक सैन्य अभियांत्रिकी प्रणालियों एवं उपकरणों जिनमें प्रोग्राम ए डी (वायु

प्रतिरक्षा कार्यक्रम) के लिए मिसाइल लांचरों, मध्यम दूरी तक जमीन-से-हवा में मार करने वाली एम आर एस ए एम मिसाइल, निर्भय सबसोनिक क्रूज मिसाइल सिस्टम, प्रहार, तेजी से जवाबी कार्रवाई करते हुए जमीन-से-हवा में मार करने वाली क्यू आर एस ए एम मिसाइल, लंबी दूरी तक मार करने में सक्षम एक्स आर एस ए एम मिसाइल, हाइपरबैरिक चैंबर (अतिदाबीय प्रकोष्ठ) एवं सचल पावर सप्लाई एवं उच्च दाब के हाई प्रेशर न्यूमैटिक सिस्टम शामिल हैं, से संबंधित उपकरणों को सफलतापूर्वक अभिकल्पित एवं विकसित करने के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है। 27 मार्च 2019 को डी आर डी ओ द्वारा उपग्रह रोधी मिसाइल परीक्षण कार्यक्रम 'मिशन शक्ति' को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस मिशन की महत्वपूर्ण प्रणाली एक तैनात किए जाने योग्य प्रोटोटाइप की संकल्पना को ध्यान में रखते हुए बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्चर को अभिकल्पित एवं विकसित करना था। इस लांचर को श्री कुरुलकर के सक्षम

मार्गदर्शन और नेतृत्व में मात्र तीन महीने की अल्पावधि में विकसित किया गया। आपके नवोन्मेषी कार्य निष्पादन तथा प्रबंधन तकनीक का परिणाम यह हुआ कि यह प्रणाली न केवल समय से पहले ही मिशन हेतु प्रयोग में लाए जाने के लिए तैयार कर ली गई बल्कि इससे अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियरिंग) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे प्रयोगशाला को बहुत अधिक सम्मान भी प्राप्त हुआ।

श्री कुरुलकर ने उभरती हुई प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों जैसे कि उच्च निष्पादन करने वाली उच्च शक्ति के सर्वोत्कृष्ट प्रौद्योगिकी, प्लेटफॉर्म स्टेबलाइजेशन प्रौद्योगिकी, ए एफ पी एम आधारित ऐल्टरनेटर प्रौद्योगिकी, वी एस सी एफ आधारित पावर सोर्स प्रौद्योगिकी, वैद्युत नोदन प्रौद्योगिकी, मिसाइल कैनिस्टर प्रौद्योगिकी एवं रैखिक विद्युत मोटर प्रौद्योगिकी जैसे उभरते हुए प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में विभिन्न नई प्रौद्योगिकीय कार्यक्रमों की शुरुआत की है। आपने डी आर डी ओ द्वारा विकसित किए गए उत्पादों तथा प्रौद्योगिकियों के असैन्य अनुप्रयोग को

बढ़ावा देने को ध्यान में रखते हुए दोहरे प्रयोग तथा विविध उपयोगी उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों को विकसित करने की भी योजना तैयार की है। आप यह भी चाहते हैं कि मित्र विदेशी देशों को डी आर डी ओ द्वारा सफलतापूर्वक विकसित किए गए उत्पादों, उपकरणों एवं प्रौद्योगिकियों को निर्यात करने के लिए पुरजोर प्रयास किए जाएं।

श्री कुरुलकर को वर्ष 2000 में सर्वोत्तम प्रकाशन हेतु विज्ञान दिवस पुरस्कार वर्ष 2002 में आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उत्कृष्टता हेतु डी आर डी ओ अग्नि पुरस्कार, आकाश मिसाइल के क्षेत्र में अभिनव अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास के लिए वर्ष 2008 में डी आर डी ओ पुरस्कार तथा वर्ष 2016 में मध्यम दूरी तक जमीन से हवा में मार करने वाली एम आर एस ए एम मिसाइल को विकसित करने के लिए उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु डी आर डी ओ पुरस्कार एवं वर्ष 2016 में डी ई एम ए द्वारा उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

उत्कृष्टता हेतु राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार (नेशनल जियोस्पेशियल अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस)

7 जून 1966 को जन्मे डॉ नारायण पाणिग्रही ने खलीकोट कॉलेज, ओडिशा से वर्ष 1987 में विज्ञान में स्नातक (भौतिकी ऑनर्स) की उपाधि तथा इलाहाबाद



विश्वविद्यालय से संबद्ध जे के इंस्टीट्यूट आफ अप्लाइड फिजिक्स एंड टेक्नोलॉजी से वर्ष 1990 में स्नातकोत्तर

(कंप्यूटर विज्ञान) की उपाधि एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़कपुर से वर्ष 1999 में प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर-एम टेक (कंप्यूटर विज्ञान एवं डाटा प्रोसेसिंग) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), बंबई से पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), डी आर डी ओ, नई दिल्ली में वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रोफेशनल करियर की शुरुआत की। वर्तमान में आप देश के सशस्त्र बलों के लिए स्वदेशी भू-स्थानिक

समाधान (जियोस्पेशियल सॉल्यूशंस) को अभिकल्पित एवं विकसित करने के कार्य में जुटे हैं।

डॉ नारायण पाणिग्रही स्वदेशी भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी आई एस) से संबद्ध प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्य को करते हुए विगत दो दशकों से भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी आई एस) एवं सुदूर संवेदी (रिमोट सेंसिंग) उपकरणों के वैज्ञानिक आधार से संबंधित कार्य कर रहे हैं। आप कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) में

पाठकों की राय

(आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक परिमार्जित करने का अवसर प्राप्त होगा तथा ऐसा करके हम अपने संगठन की बेहतर सेवा कर पाएंगे)

1. स्थापना का नाम : _____
2. आप डीआरडीओ द्वारा किए जा रहे प्रौद्योगिकी तथा उत्पाद विकास को उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करने के एक माध्यम के रूप में डीआरडीओ समाचार का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
3. आप डीआरडीओ समाचार में शामिल की गई तकनीकी सामग्रियों का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
4. आप डीआरडीओ समाचार में शामिल किए गए चित्रों की गुणवत्ता का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
5. आप डीआरडीओ समाचार को उपयुक्त रूप में कितने पृष्ठों की पत्रिका के रूप में देखना चाहते हैं?
8 पृष्ठ 12 पृष्ठ 16 पृष्ठ 20 पृष्ठ
6. आप डीआरडीओ समाचार को किस माध्यम में पसंद करेंगे?
मुद्रित ई-प्रकाशन वीडियो पत्रिका
7. आपको डीआरडीओ समाचार की प्रति कब प्राप्त होती है?
 प्रकाशन के पूर्ववर्ती महीने में
 प्रकाशन के माह में
 प्रकाशन के अगले महीने
8. डीआरडीओ समाचार में निहित तकनीकी सामग्री में आगे और सुधार लाने के लिए आपके सुझाव :
.....
.....
.....

नाम : पदनाम :

संगठन का नाम :

दूरभाष : ई-मेल :

पता :



कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक, डीआरडीओ समाचार, डेसीडॉक, डीआरडीओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

दूरभाष : 011-23902403, 23902482 फ़ैक्स : 011-23819151

ई-मेल : director@desidoc.drdo.in



डीआरडीओ समाचार अपने प्रकाशन के तैंतीसवें वर्ष में है। यह प्रकाशन रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) का मुख पत्र है। यह प्रकाशन डीआरडीओ की वेब साइट पर पीडीएफ रूप में उपलब्ध है। इस प्रकाशन को अपने पते पर मंगवाने के लिए कृपया निदेशक, डेसीडॉक को लिखें।

जियोग्राफिक इनफार्मेशन सिस्टम डिवीजन के प्रमुख हैं जहां आपने स्वदेशी भौगोलिक सूचना प्रणाली (आई एन डी आई जी आई एस) को सफलतापूर्वक अभिकल्पित, विकसित एवं क्रियान्वित करने के कार्य में जुटी वैज्ञानिकों की टीम को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। स्वदेशी भौगोलिक सूचना प्रणाली (आई एन डी आई जी आई एस) से संबंधित प्रौद्योगिकी देश के लिए इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने तथा विकसित

देशों द्वारा अपनी प्रौद्योगिकियों को अन्य देशों को अंतरित करना अस्वीकार करने के इस दौर में देश को सुरक्षा प्रदान करने को ध्यान में रखकर विकसित की गई है।

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में और विशेषकर भौगोलिक सूचना विज्ञान तथा सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) अनुप्रयोगों एवं प्रौद्योगिकी को व्यापक प्रयोक्ता समुदाय द्वारा प्रयोग के लिए संवर्धन प्रदान करने के क्षेत्र में उच्च मेधा शक्ति से संपन्न

अनुसंधानकर्ता, अकादमिशियन तथा प्रोफेशनल डॉ नारायण पाणिग्रही द्वारा किए गए उत्कृष्ट योगदान को सम्मानित करते हुए इंडियन सोसायटी आफ रिमोट सेंसिंग द्वारा इन्हें वर्ष 2019 के उत्कृष्टता हेतु राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार (नेशनल जियोस्पेशियल अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस) से सम्मानित किया गया है।

निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलुरु

रीयर एडमिरल साई वेंकटरमन, वी एस एम तथा कमांडेंट, नेवल वार कॉलेज ने 12 अप्रैल 2021 को कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बेंगलुरु का निरीक्षण किया। इस अवसर पर प्रयोगशाला में पधारे अतिथि के समक्ष डॉ यू के सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, केयर ने प्रयोगशाला द्वारा किए जा रहे विभिन्न क्रियाकलापों के संबंध में संक्षेप में एक विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके पश्चात कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर) द्वारा सुरक्षित प्रणालियों (सिक्वोर सिस्टम्स), कमान एवं नियंत्रण प्रणालियों तथा बुद्धिमान प्रणालियों एवं रोबोटिकी के क्षेत्र में विकसित की गई प्रौद्योगिकियों के संबंध में विस्तृत विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह

रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी 19-23 जून 2021 के दौरान रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह के निरीक्षण-दौरे पर आए। इस दौरान आपने विभिन्न सीमावर्ती क्षेत्रों

जैसे कि सियाचिन बेस कैंप, जीरो आर डी और चुमाथान्ग का दौरा किया जहां आपने सैनिकों एवं स्थानीय लोगों के साथ मौके पर 'ऑन ग्राउंड' मुलाकात की। आपने 21 जून 2021 को एक अग्रिम चौकी (फॉरवर्ड पोस्ट) पर सैनिकों के साथ योगाभ्यास करके योग दिवस भी मनाया। इस पारस्परिक मेलजोल कार्यक्रम के

दौरान आपके साथ डॉ श्रीमती चंद्रिका कौशिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, डायरेक्टरेट ऑफ इंटरैक्शन विद सर्विसेज फॉर बिजनेस, डी आर डी ओ एवं डॉ. ओ पी चौरसिया, निदेशक, डिहार भी उपस्थित हुए थे।

23 जून 2021 को अध्यक्ष, डी आर डी ओ ने लद्दाख के माननीय उप राज्यपाल



श्री राधा के माथुर से भी राजभवन में मुलाकात की। उप राज्यपाल ने वैश्विक महामारी कोविड-19 के विरुद्ध लड़ाई और विशेषकर इस विषाणु के प्रसार पर रोक लगाने में रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की। श्री माथुर ने रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) द्वारा किए जा रहे कृषि पशु अनुसंधान कार्यों की भी सराहना की तथा इस स्थल रुद्ध क्षेत्र (लैंडलॉक रीजन) में स्थानीय अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) द्वारा निर्वहन की जा रही अग्रणी भूमिका की सराहना की।

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) में अपने प्रवास के दौरान डी आर डी ओ के अध्यक्ष ने इस प्रयोगशाला द्वारा चलाई जा रही विभिन्न अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की भी समीक्षा की तथा संगठन की उभरती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप भविष्य में रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार) द्वारा शुरू की जाने वाली नई परियोजनाओं के संबंध में सुझाव दिए



रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली

मेजर जनरल राजीव नंदा, स्थानापन्न महानिदेशक, रिट्रूटिंग ने 24 जून 2021 को रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली का दौरा किया। इस अवसर पर आपके साथ ब्रिगेडियर मनीष अरोड़ा, ए डी जी, रिट्रूटिंग तथा कर्नल एम डी एस दुग्गल, निदेशक, रिट्रूटिंग 'ए' भी उपस्थित हुए थे।

इस निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ. के रामाचंद्रन, निदेशक, डी आई पी आर द्वारा प्रयोगशाला में पधारे जनरल

अफसरों को रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) के इतिहास तथा विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करने के लिए सशस्त्र बल के कार्मिकों की चयन प्रक्रिया में इसके महत्व के संबंध में संक्षेप में जानकारी दी गई।

इस दौरान चयन प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न तकनीकों तथा इन प्रक्रियाओं को और अधिक कारगर बनाने एवं अनुवर्ती अध्ययन, आदि विषयों पर विचार-विमर्श किए गए।

कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें :

सम्पादक, डीआरडीओ समाचार, डेसिडॉक, डीआरडीओ, मेटकॉफ भवन,
दिल्ली – 110054



www.drdo.gov.in/drdo/English/index.jsp?pg=samachar.jsp

